हारना मेरे लिए मंजूर नहीं ।

जिंदगी बनो !

शहर से दूर रेल्वेस्टेशन मे... । शाम होने ही वाले थे । पेड़ों के बीच मे से सूरज की किरणें जमीन पर पहुँच रहे थे, मानो जमीन पर सुनहरा चादर बिचाया गया हो । दूर-दूर से पँखियों की आवाज भी सुन रहे थे । "मुम्बई" बहुत सुन्दर दिख रहा था ।

लोगों से भरे रास्ते, सब अपने-अपने काम मे व्यस्त थे । कुछ लोग जिंदगी को एक करने की चक्कर मे थे और दूसरी तरफ कुछ लोग जिन्दगी और समय को हाथ मे पकड़ कर भाग रहे थे । सब अपनी जीवन की भागमभाग में खो चुके थे ।

इस शोर के बीच मे भी "मनु" अपनी ख्यालों मे डूब रहे थे । एक अजीब

खामोशी उसको कैद कर लिया था।

मनु करीब चौबीस साल का था। काफी सुन्दर दिखता था वो, साफ-सुथरा कपड़ा उसको और सुन्दर बना रहा था। उसका चेहरा इतना खूबसूरत था मानो चेहरे पर चाँद खिल उठा हो। पर आँखें कभी झूठ नहीं बोलते, उसकी काली गहरी आँखें थके हुए थे। अंदर से वह टूट चुका था।

कुछ दिन पहले की बात है। मनु अपनी गाँव से दूर, मुम्बई मे अपनी नौकरी के दौरान आया हुआ था। बहुत ईमानदार था वो, पर अफसोस की बात यह था कि उसकी ईमानदारी की ~~फाइदा~~ फायदा उठाया गया था। धोखे के शिकार बन चुके थे वो। उसको नौकरी से निकाल दिया, मनु को ऐसा लगा जैसे उससे उसकी ज़िन्दगी ~~को~~ही छीन रहा हो। उसका दिल टुकड़ा-टुकड़ा हो गया।

"अब आगे जीकर क्या फायदा... थक चुका हूँ मैं।" उसने अपने मन में सोचा। मनु बस बैठकर आसमान की ओर देखता रहा।

"माँ मुझे तो चाहिए, अभी-अभी।" वह एक छोटा सा लड़का था। एक लाल गुब्बारे को इशारा करके वह अपनी माँ से बोल रहा था। पता नहीं क्यों पर अचानक मनु की नज़र उस पर पड़ गया।

"नहीं बेटा, आज नहीं। हमें जल्दी जाना होगा।" अपने बेटे को सुनते ही उस माँ ने कहा।

"माँ... दिलवा दीजिए न! देर नहीं हुआ है।" आखिर कार उसकी माँ ने उसको वह लाल गुब्बारा दिलवा दिया। उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। उस छोटे से लड़के ने मनु को देख कर मुस्कुराया। और अपनी माँ के साथ चला गया।

"यही है वो ज़िद जिसको हम सब ने सालों पहले ही भूल चुके हैं।" एक गहरी आवाज़ मनु की कानों में पहुँचा।

एक बड़ा सा आदमी, करीब पचास साल का होगा। अच्छे कपड़े पहना हुआ था। हैरानी की बात यह था कि मनु को तब एहसास हुआ कि कोई उसके पास बैठा हुआ था। उसने उस आदमी की ओर देख कर बहुत मुश्किल से मुस्कुराया। उसकी अंदर छुपा वह दर्द उस मुस्कान में बिलकुल साफ दिख रहा था।

"काश मेरा बेटा भी ऐसा होता...! इसी जह जगह से मैं अपने बेटे को खो दिए थे। जिन्दगी ने उसको झटका दिया और उसी वक्त उसने हार मान लिए थे।" उस आदमी की बातों में एक दर्द छुपा था। मनु ने उस आदमी की आँखों में देखता रहा।

"जिन्दगी की मैदान से हार मान लिए थे तो।" टूट-टूट कर उस आदमी ने मनु से कहा।

उस ~~बक~~ वक्त मनु यह एहसास किया कि उस आदमी की बेटे ने आत्महत्या कर दिया थे। उसने जिन्दगी की सच्चाई को एहसास करने लगा। उस आदमी की बातें और वह छोटे लड़के की खुशी भरी आँखें, मनु के अंदर तीर की तरह बार-बार पड़ने लगा।

"आप का बहुत-बहुत शुक्रिया, आप ने मेरे दिल को खोल दिया।" मनु ने मुस्कुराकर उस आदमी से कहा।

"ज़िंदादिल बनो बेटे, अपनी ज़िन्दगी को खुल कर जीयो।" चमकते हुए आँखों से उस आदमी ने कहा।

बात करते-करते रात हो चुके थे। पूरा आसमान तारों से भरा हुआ था और ~~अ~~ उसके ठीक बीच चाँद बहुत सुन्दर दिख रहा था।

जाने से पहले उस आदमी ने मनु की हाथों में कुछ दिया।
"शेखर राम, मुम्बई फाऊंडेषन" मनु चौंक कर उठ गया। मुम्बई की एक बहुत बड़ा बिसिनस ग्रूप था वो। उसकी अंदर एक नई उम्मीद पैदा हुआ। एक नया रास्ता खुल गया।

"हारना मेरे लिए मंजूर नहीं।" उसने अपने आप से कहा।

सबक : कभी-कभी हम जिन्दगी और समय से दूर पड़ जाते है, और वह बिलकुल ठीक है। बस याद रखे हम अपने आप से दूर न हो। पूरी होशियारी से आगे बढ़ो।